भजन

तर्ज : उठ जाग मुसाफिर भोर भई

श्री प्राणनाथ पूर्णब्रह्म ने, सब धर्मों का झगड़ा मिटाया है
है सोई खुदा सोई पूर्णब्रह्म, ये अनोखा ज्ञान सुनाया है

1. ये दुनियाँ आदि-अनादि से, थी आवागमन के चक्कर में
ब्रह्मज्ञान की अखंड वाणी से, त्रैगुण का फन्द छुड़ाया है

2. सब कहते हैं इक पूर्णब्रह्म, पर है वो कौन मिटा ना भरम
अपनी पहचान बता करके, निजघर का रास्ता बताया है

3. श्री विजयाभिनन्दन प्राणनाथ, नर तन में पधारे हैं साक्षात्
धन कलयुग और धन भरतखंड, जहां आपने फेरा लगाया है

4. हम सुन्दरसाथ हैं अंग उनके, भूले हैं माया का संग करके
हम परमधाम से आये हैं, हम सबको ये समझाया है